

[illegible]



अध्यामाषमजानन्तात्तर्मा मेवेन मोहिता प्रतिक्षयं जितेन्द्र्यानां कृत्वा यास्यंति ऐरवंप्र

यसादकन। यययथाविद्ययादुर्नदात्रि॥ तद्वयादादधमद्विनिष्ठस्यस्वविद्वमर्दयासितमयवयसादसा रनुता  
मयगङ्गामिष्टिगायकावदति। मामेव। यदिवदिनिष्ठस्यथाद्वयं तदादुर्नधायनीनिष्ठयथाजनी। अयमश्नु॥ विषमा  
यियथानक४४लिलान्निष्ठता। व४४वमादिनिर्गन्त४४स्यं सिंहायिष्याष्टमसुवता॥ दवस्वयं गत्वाहृष्टतायुद्ध। य  
त४४यूनस्वत्यवर्तनाजायाधनदवलाकयन। स्वामिनाधिष्ठित४४धायिकिर्नर्मिहायवध्ववी। अननवी॥ तसर्व  
दुर्जघानगत्वामहाहर्वकं तवक४४। अयनत्यजेविणवल्मनाजागृधमूवाव। नातततस्वयतिष्ठातमधूनाहिव। ५०  
हय॥ गृध्रवृत्त॥ गृध्रगावत। अकालमहमयलीमुख्यमनिनायकी। अगुर्फीलीन्योर्वयदुर्जघानमनमयता॥  
तत्तावदयनास्ति। डयजायन्विनावाध्वावस्कन्दसीवयोवृष४४। दुर्जस्यल्लनायायास्थत्वाव४४कथितावृम

[illegible]



य

यतादिदं अहं ददवस्य दूर्नाधिकानां नमः ममासा सुचिलिधनं दानवर्मदाय विनश्यत् ॥ अथ नमः । ददवमीदा  
गुहायाहीस्वामीदः खनलस्य न ॥ वा ऊँ ह । अथ वीकिं ॥ पु विदे का नूनक स जान रुथायिदले रु ॥ सा नभा वना अ  
अवदवद वः ॥ यदि मम नया स्याना किं मृत्वा रुय मितिय कृमिनां च ॥ यथा हं अथ मम सवधमवजन्ता ॥ किमिति स  
धमलिनेय ॥ १ कियत अन्तर्वा रुवसिन्धव ना जाकवी विविजमरुं गुत्रा जायत यत्थया ग्ननयना (थजा विनयय ॥ अथ वदव ॥ श्री ८१  
स्वामी सर्वदा क्लीय ॥ यन ॥ स्वाम्यामाय ॥ यथा दुष्टय गैरुकाया वलं सुदृता प्राप्ता मीनिय कृत य ॥ यथा नमः ॥ अथ यिवा अज  
यिषु धनं प्राप्ता गन्ता ॥ अथ नमः ॥ अथ तिष्ठस्वामिना स्यात् । समुद्रा यिन जीवति । अथ धनं न प्रवेद्य ॥ किं कत्राति गतायुधि  
अथ न वान न वलं वला कार्य निमालति निमीलति । उदर्य दीयमानव नृवा विवसना नृहं । अथ कृकूट नाग सना जहस

श्री ८१

त्यक्तनसामुवाद्यातः १ कृतशगतसत्त्व नमः यस्तस्य सा नसन स्वदहना कप्रिगा प्राजा ॥ अथ नमः कृकूटे नखमखयुदा  
ऊँ नमः । नमः सा नमनस्वा (नना दाय प्रय प्राजा जल क्रिय ॥ कृकूट सना यतिव्य ववूयुदा न वद्याया दित ॥ यध्यैत्स  
नसायिव दृ ॥ १ स रयथाया दित ॥ अथ विणव (पु दिनेय विष्य दूर्म वसिन्त दृवां गम रु यित्वा वी दि रिज यन यना  
नीदित ॥ १ स्वर्क धाता नं जगम । वा जं यत नैकी । तस्मिन् वा जहं सवर्नै यत्थवा लन सो सा न स एव । यन स्व दहदा  
नन स्वा मी न दित ॥ १ डकी वेतत । जनया के सुता गो नं वः सर्व एव गदगीने । विद्यात्माने शिव तत्कर्म का विदवगवाम्य  
ति विद ॥ १ म (नीकी सता वत स्व नं स जी जन क य यत्थ सो की विद्या धत्री यात्रि जना नृव वरु मदा सत्त्व ॥ अथ वीका । अथ वव  
यय न ॥ १ स्वा म्य धं स्या का जी विना ॥ १ रु रु का कृत रु ॥ अथ नमः ॥ १ स्वर्न गमि न ॥ अथ नमः ॥ यत यत रुत ॥ १ ५४











३१

रुत न ह्यसिद्धा का गत मर्मावृजामि। स उपाया विधाय नीरु सावृता। कथमय मूयाय स रुतानि कर्मा विदमि। य  
यावद्विदुः। न का कुरुतु मर्क म<sup>१</sup> मया पि मुख नावल मयि न शी न ना रुत ता ४ य रुत ल न मया विग न वी। रु सा  
वृता। स रुत य स उपाय ४ किं तु ॥ उपाय वि कर्य प्राप्ता कया य मयि लि कयत ॥ य य ता व रु मय्य ह्य न कूल रु कि ता ४  
स ता ४ कू मा वृ न ॥ कथम न ता रु स ४ कथयति। अ मारु नाय थ ४ वृ वृ ना नो म नि नि ४। न वृ ना व नी ती न न्य (अ ध या द ३। ४  
थ व का नि व स कि। न ता व रु ह्य ध रु दि व न स र्य कि ४ ति। स र्य स र्य क् षी व का ना व ला य ह्य नि खा द नि। न त ४ ॥ का  
ला ना व का ना पु ला र्थ पु ला क न वि द क ना की। उ र्व कू वृ त य र्य म स्या ना दा या ग म न कूल वि व ना दा न य स र्य वि  
व न र्य। व र्य कि क म ले के क ॥ म स्या न वि स्ती र्य द रु ४। ग त रु दा रु न लू व न कूल न य मा ग ह्य व द रु व ४

१२५५ वा द द वा ह्या या द यि त य ४ वा त थ नू वि त त रु ल। अ थ न न कूल रु व रु व क ४ का ना व रु त ४। य ४ ४ ले न कूल रु व क ४  
व क ४ रु मा न रु स र्व उ क दा या या दि ता ४। अ ना रु वृ ती मि उ पा य न य ४ रु ह्य दि ॥ अ वा र्णा नी य मा न व र्णा वि ला क ला  
४ किं रु कि रु दि रु व रु क म व न दा क रु य दा ल म रु न दा स ति न दा ल न न र्ण। त रु वृ थ ४ रु व रु ह्य य नी ॥ म मा वि त। कि  
म रु म रु ४। न किं म वि म या व क र्ण। न त रु थ नू वि त त थ वि र्थ कू म म व ला क स र्व (म रु क का ४ य ४ ४ वा व नि व द कि व ॥  
क वि द न त य य क ला रु क यि त थ र्य। कू म रु क वि रु द रु ॥ रु द न त थ र्य। त य रु व व र्ण ४ ला म रु म रु ४ का ध वि रु त य र्व रु स्का  
४ रु व द रु ४ रु मा रु रु रु क यि त थ मि ति। व द न व य ति ता ह्य या दि त थ ४। अ ना रु वृ ती मि रु द रु द रु दि त का मा ना मि रु दि ॥ ॥  
४ रु मि थि रु दि ता व क ४। अ न ह्य वा या दि व रु ल। न व म या व दि ती। य रु रु रु ४ ध न य ति रु रु का र्य मि ति ॥ य रु य रु ४



रिनेकतमतसुदनवधनस्यरुलतिदमनेरुती। इनेदाहस्यमयमयवर्तुनासावायसनधुययुक्रमकत॥ राजानि॥ ४४॥ द्यादं  
 ॥ यत्नमादयकावादाथाविषयसिति॥ ४५॥ सुसुखं वदका। ययति॥ ४६॥ यतिवधत। यतिविषयव। ॥ ४७॥ तादनेदाहं विषय  
 यदागतामयवर्तुसुदाविषयवर्तुनेप्रसाधितनार्क। अयमयमयवर्तु। एकवर्तुनदीयनाय। रिषियता॥ ॥ ४८॥ ॥ ॥ कतकए  
 य  
 ह्यरुह्यस्यकर्तनेवधमहायत॥ हलनमनसावाया। दद्याथनेयुह्ययत॥ वकीवदति। ततसुत॥ ४९॥ यतिविषयकथयति॥ ता  
 यधनेमसिधम। धमरिविदिता। देवमयसुविते। प्रसादान्ननेक्रियती। यत॥ ५०॥ अविवात्रयतायुकि। कथनेनयकयु  
 नी। नीवमयकर्तनेनानुवाल्कासिवमृष्टिने। अयन॥ ५१॥ महतासायदनीव॥ कदापिनकत्रातिय॥ अधिकारीयदातन। ह्य  
 तसकलजगता॥ ५२॥ ॥ ॥ नीव॥ ५३॥ अयदयाया। स्तामिनां। लायुमिद्विती। मूषका। या। तां। या। मूनिहं। रतायथ॥ ५४॥ विव

वर्तु॥ ५५॥ इति। कथमनेन॥ ५६॥ दूजदनीकथयति॥ अस्ति। गतमयमरुषसुधावनमहानवा नाममूलि॥ ५७॥  
 नायमसा। नमनसुषकमेवके॥ काकमूखा नयकादृ॥ ५८॥ यथादयालुनातनमूलिनानीवानकले॥ ५९॥ सयनि  
 यालित॥ ६०॥ तसुमूषकखादयिर्तुयनादमिष्टानि। ठोला मूनिनादृ॥ ६१॥ तत॥ ६२॥ यथावात्समूषकाविजालकत॥ ६३॥ सवविज  
 ल॥ ६४॥ कवादिहति॥ ६५॥ ततासोकक॥ ६६॥ कत॥ ६७॥ ककनस्यथायासहदुयी। तदनकर्त॥ सया॥ ६८॥ कत॥ ६९॥ अथयाप्रमयिते। मूनिनूषक  
 निर्विजालययति॥ ७०॥ तमूनिश्चदृक्तासर्ववदनि। अनेनमूलिनार्थमूषकाया। तां। नीत॥ ७१॥ वतदृक्ता। वया॥ ७२॥ सय॥ ७३॥ विव  
 यता। यावदननमूलिनागीवितर्तावदिदंममसुदयाख्यानकीर्तिकर्तनयलायिष्टात॥ ७४॥ लायामूलिदंरुगत  
 ॥ ७५॥ तत्तुलामूलिनायनमूषकवनकत॥ ७६॥ अताहं ववापि। नीव॥ ७७॥ अयदयायायादि॥ ७८॥ ॥ अयनेव॥ ७९॥ देवस







हि

सुत्राज्ञाद्वितीया ॥ मया तावन्मन्त्रितं दालाद्यैर्विगतमस्ति ॥ यदुक्तं तावन्मन्त्रितं नाननमघव ॥ सुत्राज्ञायावन्तिकर्तुं  
प्रदीपस्याहमवस्तुनितान्माकनयनतश्चानिगतमहताविलासनास्मार्तिर्विन्ध्यावस्तुतर्था ॥ दूतदर्शविदुस्याह ॥ दवा ॥ अ  
नागतवतीश्चिकित्सायामुपद्रव्यनि ॥ सतिजस्तुमाप्रानिहृत्तला ॥ अथथद्विज ॥ ॥ **नाज्ञावाया ॥ कथमै**  
**गता ॥ सा ॥ द्वितीया ॥** अस्तिदेवीकाटनगनवदशमो नामवाक्य ॥ तनविष्वत्समयसकृत्तननावचक ॥ या  
क ॥ तनकमायोसोरागुपुल्लकककाजुमेयिकेककसूफ ॥ सनचिकयने ॥ ययहमिदं ॥ कु ॥ नावचिः  
कीयदशकयदकोनयाप्रामि ॥ तदातनिरुसमययदशनावानूयकीयचिकीयानक ॥ यदहं ॥ सन ॥ यन ॥  
यगवस्तुदिकमयकीयेचिकीयसकृत्संख्यानामिधनायनायविवाहवउदयंकनामि ॥ तनस्तस्यस्रीष्याः

शी ८१

दूयशोवनधनवतीतस्यामधिकानूनागैकनामि ॥ अनननैसंज्ञातर्थास्तुतस्ययायदाददंकुर्वन्कि ॥ तन ॥ काया  
कलाहला ॥ सयत्नात्रिकूलगुठलेनताठयामीत्यरिधायतनत्रगुठ ॥ किफ ॥ अथसंकेतगुहावावधूलिताहा ॥ अतिववदुति  
रुत्तानितता ॥ रागुरुमहादेनागतकम्हकात्रेसर्वदकासुवाकलसिक्तामपुयिकागरुविहि ॥ कत ॥ अतादवुवामि ॥  
अनागवतीश्चिकित्सादि ॥ ॥ **तता ॥ राजा ॥ नहसि ॥ गुरुमेयुक्त ॥ तातयथ ॥ कर्तुं ॥ यमै ॥ यदि ॥ गुरु ॥ धु ॥ त ॥** मदादततस्यनयत  
॥ संकीर्णस्यवदन्तिन ॥ गद्वृत्तान्मयातस्य ॥ नता ॥ ॥ खलुवाद्यता ॥ ॥ लतावद्वकिमस्मार्तिविदे ॥ दूर्गमस्वदथाहृत्ता ॥ नवारुवत्य  
तायाधिहितनायायन ॥ **राजा ॥** हवतामेयायता ॥ **गुरु ॥ धु ॥ त ॥** ययस्मास्मदवर्नकियत ॥ तदाद ॥ ॥ गम्यतधूना ॥ अथथसंयुता  
हामन्नवर्षाकारुतुल्यवलनसहयूनविगुहसहस्रार्कयत्ररुमिहानास्वदश ॥ गमनमयिदुर्लभंरुविद्युति ॥







निष्करोवदिः कृतः।। रीतुकारो नृकजनालुखालुजनसुखे॥ विवकयकृतिः (येव, विषयवृत्तिः) किं मां (अनकविरुमकु  
 ४४. दववाकलनिन्दकः॥ देवायहतकः (येव, देवविनकयववा) दूरिदवा सभायता, वलवसनसंकुलः॥ अदहाला  
 नरुत्रियमूकः॥ कालनयः (येन) सत्यधर्मवृत्तः (येन) विविधतिः॥ यत्र बाजमी॥ (नते)॥ समिधिनैव कर्त्तव्यं विवक्रीया  
 य नृकवर्त्तः॥ (नत) विवक्रीया मातृदिद्विधं यानि विधावर्त्तः॥ वालस्याल्ययरावत्ता, नृपाकायाद् मिद्वति॥ यद्वायु  
 उहर्त्तयत्ता, दूरिदवा नवालिः॥ (उत्साहः) किं हीनत्वा, दृढादीद्यमियसुखा। स्वेन वयविरुत्ततद्वावत्ता  
 र्त्तयः। सुखाद्यैर्नुरुधतिस्वकृतिवदिः कृतः॥ (तु) वने विनिघ्न निक्कतयत्ता ससात्तु ताः॥ रीतुयुद्धयविष  
 मत्स्ययमवायमकृतिः। वीयायावीनयुत्तये॥ संगमभने विमृशता। लुखालुसंवितातिता, नयध्वननजीविन

१। लुखालुजीविकेत्रव, नानविनेत्रिद्वयत॥ सत्यवृत्तयुक्तित्ति, विवकयकृतियुधिः॥ सुखा, रिता, अरुवति विषयः  
 यानिः॥ किं मां (अनकविरुमकु) उद्वाहवतिमन्त्रिणं (अनवहितविनवा, कार्यतः) सडयकृतः॥ सदाधर्मवर्त्तयत्ताः  
 दववाकलनिन्दकः॥ विषयतस्वयं प्रव, देवायहतकसुखा॥ सत्यरुष्यवियरुष्य, देवदवहिकाविली, कृतिदेवयनीध्व  
 यमात्मानमयिवरुत॥ दूरिदवा सतीवेव, स्वयमवावसीयति॥ वलवसनयुक्तस्य, आर्द्धः॥ किं न जायत॥ अदहाला  
 हिमियुत्त, स्वत्यकनायिद्वयत॥ (अह) श्लयीयानयिजल, नऊनुमयिकर्त्तति॥ यद्वायुसुसंजुक्तः, (ये) (येन) नम  
 (ये) कयातवत्ता। येन वगकृतियध, तनेवाधुविद्ययत॥ अकालसंनययकसु, हन्यतकालयाधिना। कोशिकन  
 हतयति, निर्वाधं वायसः॥ सत्यधर्मवृत्ततन, नसंदध्वात्कदावन॥ ससंविताया साधुत्वा, द







[illegible]

त्मरुत्तान्मकथयतां नेष्टनीत्वा सिंहसमर्थितशतनयारयवाचनदत्त्वा वित्तकर्तुं किनामकत्वा स्वस्वायितः ॥ अथ कदाचित् सिंह  
 उच्यते त्रीनवकल्यातुरुगातिवृष्टिकावलाञ्छाह्यमलरुवानाभयप्रभुवृक्षातवः ॥ काकश्चायुः ॥ मायूरिनाञ्छावितः ॥ वित्तकः  
 कर्तुमवयथ ॥ स्वामीयायादयति तदनुशीयतां ॥ किमनन ॥ कुरुजास्मार्क ॥ **द्याधुवृक्ष** ॥ स्वामिनारयवाचनदत्त्वा स्वसंन  
 तः ॥ तत्कथमवर्तं संहवति ॥ **वायसावति** ॥ वृक्षसमथयति ॥ **स्वामीयायमधिकविष्टाति** ॥ यतः ॥ **एतत्तद्वृक्षमालम**  
**हिलायियुक्तं** ॥ स्वायतनद्वयमालयजगामस्वमर्त्य ॥ वृक्षद्वितः ॥ **विन्नकत्रातिवार्यकीलमननातिस्कनूर्म** ॥ **रुर्वति** ॥ **अग्यद्या**  
**मर्त्य** ॥ **युमर्त्यममर्त्य** ॥ **धर्मनः** ॥ **कृष्णवृक्षद्वितः** ॥ **लुधारीवृक्षनायक** ॥ **कामकक** ॥ **धर्मवित्त** ॥ **तिनिष्ठित**  
**सिंह** ॥ **तिर्कजम्** ॥ **सिंहनाक** ॥ **आह्वानार्थं** ॥ **यार्क** ॥ **किंवित्त** ॥ **काकनाक** ॥ **यवयन्नायकि** ॥ **जित्तयार्क** ॥ **सिंहवृ**



























हि॥ सत्रसिवदुहासाकाकृम्यकामत्यप्रिर्वितनः कृम्यदविटयान्वाहमानिभसुविचकलशानदशतियूनत्रोकोः  
कोदिवायिमिनात्यलंकृकवकितालाकः सप्रययायमयकभ॥ नद्वयथभक्तिगतयुजाथप्रहायहावादिनाम  
गसुजीडियता॥ गधनविभसुगधमंतीदुर्नडात्रावकवाकवैनायनम्यसुतदहानीयवेदलामुनडयविदुषावकुव  
कडवाय॥ महामलीनयुषायायलुखद्वयाविलयतामिदंराय॥ राहजे॥ उवमवती॥ दूत्रदगविता॥ उवमवततु॥ कि  
विदानीविदुषयवववर्ननिषुथाजन॥ यत॥ सुखमथेनगदीयातसुतुमजुलिकेसुला॥ मुखेद्वन्दानुवहनं  
धन॥ धनवलिता॥ अन्वय॥ सहावनहप्रमिर्तु॥ संरावनववान्वावातोहोरुपान्दानमानायादि॥ धनतत्रज  
न॥ तदितानां संधयप्रहायतामयमहायतायधिवव॥ सुत्राका॥ वकावत॥ यथसंधनकार्यनदयुगता॥

वाजादंसाकृत॥ कतिपुकावाः संधीनां संरुवति॥ गधार्हवोति॥ कथयामिधुयता॥ वलायसाहियुकमुनवाहन  
गधमिदियः॥ अयनः॥ सन्धिमन्त्रिकुवुलि॥ कालयायन॥ कयालडयहात्रः॥ सन्तानः॥ संगतसुध॥ डयन्या  
सुधगीकात्रः॥ संधागः॥ यत्रेयानत्र॥ अद्वयनत्रादिह॥ आतामयडयगुह॥ यत्रिकयसु॥ धिने॥ सुधयय  
नरुयल॥ सु॥ धोयनयसन्धिय॥ वाउ॥ यत्रिकारित॥ अतिवाउ॥ कयादु॥ सन्धिमन्त्रिविचकल॥ कयालः  
संधिर्द्वयः॥ केवलं॥ समसंधित॥ सुधदानाडवतियडयहात्रः॥ सडयन॥ सन्तानसंधिविद्वया॥ दानिकादानयुव  
कः॥ संधिः॥ संगतसंधिः॥ मेताद्वेडदादत॥ यावदायः॥ प्रमानसु॥ समानार्थः॥ युथाजन॥ संधिवावियः  
लोवा॥ कात्रल॥ यत्रिविद्यत॥ संगतः॥ सन्धियवद॥ यदुहवातुसुवुवितु॥ अयत्रः॥ संधिकु॥ सु॥ कयिनः॥



सुददाहृतः॥ राश्यासंकार्यसिद्धिः समृद्धिः॥ क्रियतयः॥ सुदत्यासंकर्यः॥ नूयत्यासुददाहृतः॥ मयास्थायक  
 तं पूर्वमयं प्रतिक्रियति॥ इति यः॥ क्रियतयः॥ पुनीकात्रः॥ सुदद्यातः॥ उद्यकार्यकप्रामास्यः॥ मयास्थायकप्रिष्ट  
 ति॥ अयं वायिपुतीकात्रा॥ नामसुदावयात्रिवः॥ उकार्यसम्यगुद्धिः॥ क्रियायुद्धिगुह्यतः॥ समं हितयमात्मसु  
 तसंथागुदद्यातः॥ आवथार्थधिमुर्योमु॥ सदर्थः॥ साधुतामिति॥ यतः॥ फः॥ यत्कुर्याः॥ स्नादः॥ यत्नः॥ स्मृतिः॥ यत्  
 रुयकदगान॥ यत्नमत्रियवर्जितः॥ संधायतसन्धिविहि॥ नादः॥ सुददाहृतः॥ स्वस्थानमुर्मधन॥ मात्मापि १०  
 इतिमातः॥ क्रियतयालयकार्यः॥ सर्वदानमयगुहः॥ उक्तर्ना॥ गनकथन॥ सर्वकुयेनवापुनः॥ शिष्टस्यपति  
 समर्थ॥ यत्रिकयउदाहृदातः॥ भुवोसात्रवतीनांतु॥ दानादुद्धिन्नउद्यमः॥ सर्वभूमिकनोक्तर्षदानेनचरु

गलः॥ यत्रिद्धिन्नः॥ रुलंयत्॥ प्रतिक्रियति॥ धनदीयतः॥ स्कीधायनयंत्यादूः॥ संधिर्धिविवकलः॥ यत्रश्रोत्रका  
 मः॥ मेतः॥ सर्वधर्मसंधः॥ उद्यहात्रः॥ विक्रया॥ यत्वात्रकवर्मधयः॥ उक्तुवायहात्रमु॥ संधिप्रतनतर्हिनेः॥ उद्य  
 हात्रसुहातु॥ सर्वतमेतवर्जिताः॥ अरिथाकावलीयस्त्रा॥ दलवाननिवर्तः॥ उद्यहात्राहोतस्मा॥ संधिप्रतनानवि  
 द्यतः॥ चक्रवाक्राकृतः॥ इत्युतावतु॥ अयनिः॥ जेयत्रावति॥ गलनालयुवतसी॥ उद्यत्रवनितानामु॥ वसूधवद्व  
 कः॥ अयमं॥ माहवत्यवदात्रव॥ यत्रुद्येयः॥ लाहवतु॥ आत्मवत्सर्वरुभयः॥ यद्यतिमयलितः॥ इवन्तः॥ यम  
 हायलितः॥ गदगोसार्कयथाकार्यमुद्यतिः॥ मकुवतः॥ किमवमयः॥ आविद्याधियत्रीताया॥ दयः॥ यत्नः॥  
 नाहिना॥ काहिनामः॥ नीवायधमार्थितं समावतः॥ जनान्द्वयवयलं॥ जीवितंखलुदहिनी॥ यथाविधमि



